सम्पादिक

भावपूर्ण श्रद्धांजली

Dr. Sangh Mitra Baudh,

The Editor, Bodhi-Path

अपनी विश्वविमोहिनी वाणी के प्रकम्पित तारों पर अंगुलि नचाते हुए, विहवल आकांशाओं के मार्मिक भावनाओं से ओतप्रोत, निराशा के धूमिल गगनगर्म को चीर कर उज्ज्वल आशा के अमर ज्याति प्रदान करने वाले बौद्धजगत के ज्वाजल्यमान मार्तण्ड पूज्यनीय भिक्षु विश्वबन्धु जी को सादर समर्पित।

(28.02.1939—09.11.2018)

भिक्षु—जीवन का आदर्श महान् है।

परम पूज्यनीय भिक्षु विश्वबन्धु जी की प्रथम प्रवज्या सन् 1971 में पूज्यनीय दिवंगत डा० सद्धर्माचार्य एल. आर्यवंश महास्थविर जी,(महाबोधि सोसायटी, बुद्ध विहार, मन्दिर मार्ग नई दिल्ली) द्वारा एक माह के लिए हुई।

दूसरी बार सन् 1972 में पूज्यनीय भिक्षु नागसेन महाथेरों जी,(बुद्ध विहार, डेकर रोड़, इंग्लैण्ड) द्वारा दो माह के लिए प्रव्रजित हुऐ। इसी दौरान इन्हें 15 दिनों तक दिवंगत डा० भदन्त

आनन्द कौसल्यायन जी, के सान्निधय में रहने का सुअवसर प्राप्त हुआ। जोकि इनके जीवन का अत्यन्त महत्वपूर्ण समय रहा। क्योंकि यही से प्रेरित होकर त्याग, अलपेच्छा, नैतिक जागरण एवं आध्यात्मिक चेतना को समझ कर तथागत के धम्म–मार्ग पर चारिका क्रम में अपना जीवन यापन किया।

सन् 2004 चूरू, राजस्थान में पूज्यनीय भिक्षु डा० स्वरूपानन्द जी, प्रवक्तापालि,महाबोधि इन्टर कॉलेज, सारनाथ, द्वारा प्रव्रजित हुऐ। 18 मई सन् 2005 में पूज्यनीय डा० भिक्षु सत्यपाल महाथेरों जी द्वारा उपसम्पदा ग्रहण की। इसके साथ–साथ कश्मीर से कन्याकुमारी तक धम्म चारिका व धम्म कार्य में अपने आप को पूर्ण समर्पित कर दिया।

उनके अनुग्रह की व्याख्या करना असम्भव है। इनके द्वारा प्रदत्त पूर्ण वित्तीय सहयोग तथा प्रेरणा से ही प्रस्तुत बोधि–पथ ,लघु नैतिक–शिक्षा पुस्तकें एवं जीवन पद्धति पुस्तक का प्रकाशन कार्य सम्पन्न हो सका। अपने जीवन का प्रत्येक पल उन्होंने धर्म को समर्पित कर दिया था। विलक्षण नेतृत्व, दूरदर्शिता तथा अदृभूत धम्म देशना उन्हें एक विशाल व्यक्तित्व प्रदान करते थे। उनका विराट व स्नेहिल व्यक्तित्व हमारी स्मृतियों में सदैव बसा रहेगा।

उनके आध्यात्मिक जीवन–सदाचार संबंधी विचारों को अपनाना ही सच्ची श्रद्धांजली है।

डॉ संघमित्रा बौद्ध

Bodhi-Path Year 2019 January Issue Volume 16 Page No 1-2